रात्रीक्लास 29.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद हैं?

बच्चों को समझाया है और कोई भी धर्म स्थापक कोई सबका कल्याण नहीं करते हैं। वह तो आते हैं सबको ले आते हैं। जो सभी का(को) लिबरेट और गाइड करते हैं। उनका ही गायन है। जो भारत में ही आते हैं तो भारत सबसे उंच देश ठहरा। और तो आते ही हैं पीछे। न बहुत सुख न इतना दुःख ही देखते हैं। भारत की महिमा बहुत करनी है। बाप ही आकर सर्व की सदगति करते हैं तब ही शांति होती है। विश्व में शांति ऐसे ही होती है। विश्व में शांति थी सृष्टि के आदि में। स्वर्ग में एक धर्म था। अभी अनेक धर्म हैं। बाप ही आकर शांति स्थापन करते हैं। कल्प2 मिसल करते हैं। तुम बच्चों को ज्ञान मिला है तो विचार–सागर–मंथन चलता है। और तो कोई का चलता नहीं। यह भी तुम समझते हो। देहअभिमान कारण देह को ही पूजते हैं। आत्मा पुनर्जन्म तो जरूर यहां ही लेगी ना। अभी तुम समझते हो भारत में क्या है। यह पतित आत्माओं की भक्ति है। पावन तो एक ही है। बाप ही गीता ज्ञान देते हैं जिससे सबकी सदगति हो जाती है। बाकी हनुमान ,गणेश आदि कोई होते ही नहीं। इन सबको कहा जाता है भूत पुजारी। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट ,नमस्ते।

रात्रीक्लास 4.3.68 ओमशांति

यह तो जानते हैं बाप की सर्विस में रहने से ऊँच पद मिलता है और कब भी भूख नहीं मरना होता और जमा भी बहुत होता है। जो जमा होता है वह जा नहीं सकता। विकार में जाने से सब चला जाता है। बाकी कमाई तो बड़ी जबरदस्त है। बेहद के बाप से आधा कल्प का वर्सा मिलता है। यह मनुष्य समझते हैं बाप आते हैं जरूरं वही नई दुनियां स्थापन करते हैं। बच्चे जानते हैं आधा कल्प है भक्ति जिसको ही रात कहा जाता है। अभी तुम अपने लिए अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। जो सतोप्रधान थे ही तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है याद की यात्रा से। जितना याद करेंगे उतनी ही खुशी होगी। कलियुग को पार कर जाना है। आत्मा प्योर होती जाती है। बैटरी जितनी चार्ज करेंगे उतना ही पद मिलेगा। इतनी खुशी होगी। प्वाइंट्स पर ही मदार है पवित्रता का। बाप तो है चकमक। वह तो कशिश करते हैं। शुरू में कितनी कशिश चकमक ने की। इनकी भी आत्मा तमोप्रधान थी ना। याद से कट उतरेगी, खुशी होगी। कल हम यह जाकर बच्चा बनेंगे। खुशी है ना। बाप का अकेला बच्चा हूं। बाप को तो याद कर खुशी होती है। ओहो! बेहद का मालिक बनता हूं। इनका जैसे प्रसिद्ध है। नम्बरवन में जावेंगे। मम्मा के लिए भी प्रसिद्ध है। ब्रह्मा–सरस्वती से ल0ना0 बनना है। बच्चों को समझाया है विष्णु सो 84जन्मों के बाद ब्रह्मा बनता है। ब्रह्मा एक जन्म में सो विष्णु बनता है। फिर गिरेगा , फिर एडॉप्ट हो ब्रह्मा बनेंगे। यह बताते हैं मैं कैसे बाप को याद करता हूं। ब्रह्मा सो विष्णु नामी–ग्रामी है। ब्रह्मा सो विष्णु कैसे बनते हैं सो बच्चों ने समझा? याद की यात्रा और स्वदर्शन चक्र फिरता रहता है। यह है बेहद के बाप से सहज वर्सा पाना। बाप को जाना और वर्सा हो गया। फिर पुरुषार्थ भी करना पड़े। नये2 प्वाइंट्स बताते रहते हैं। ल0ना0 (की) आत्मा तो तमोप्रधान बन पड़ी है। बाकी मिट्टी की मूर्ति बनाकर बैठ पूजा करते हैं। एक शिव की पूजा बाद में सबकी पूजा शुरू होती है। बच्चे जानते हैं यह सब हैं झूठे शास्त्र आदि। तुम बताते हो भक्ति से दुर्गति को पाया है। है तो ठीक ;परतु मनुष्य सुनते हैं तो बिगरते हैं। पत्थर मानते हैं। अरे, भक्ति दुर्गति है तब तो भगवान आकर सदगति करते हैं। पत्थर बुद्धि जैसे मतवाले। पत्थर मारने में देरी नहीं करते। यह सब गांधी सिखलाकर गये हैं। बच्चियां बैठ समझती हैं। इन्हों की कैरेक्टर और अपने कैरेक्टर देखो। तुम बच्चों को सारे विश्व का मालिक बनाया जाता है। हदें आदि कुछ नहीं है। हद और बेहद से पार फिर है मुक्तिधाम। एक तो घर को याद करो ,फिर सुखधाम को याद करो। यह दुःखधाम भूल जाओ। सुखधाम में यह कुछ भी होगा नहीं। यह सब कब्रिस्तान हो जाता है। तुम बच्चों को खुशी तो (ज)रूर रहती है। जितना याद करते जावेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ता जावेगा। सूई साफ जो जावेंगे तो चकमक को खैंचेंगे। अभी तुम देखते हो जंक चढ़ी हुई है। बाप में इतनी ताकत है जो सारी जंक निकल जाती है।

इसलिए सर्वशक्तिवान कहते हैं। बाप कहते हैं मैं कुछ भी करता नहीं हूं। मेरा तो काम ही है रास्ता बताना। बाप को भूले खेल खलास। फिर बाप को याद करने से मालिक बन जाते हो। यह भी तुम जानते हो। यह चक्र भी याद रखो तो बहुत खुशी रहे। भगवान हमको पढ़ाते हैं भगवान–भगवती बनाने ;परंतु माया खुशी में रहने न देती है। जब तक जंक न निकले। पतित को पावन बनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान इस एक ही जन्म में बनना है। ड्रामा प्लैन अनुसार हरेक पुरुषार्थ कर रहे हैं। न चाहते भी संकल्पों–विकल्पों के तूफान बहुत आवेंगे ;क्योंकि तुम अविनाशी सर्जन की दवाई करते हो। तो बीमारी उथलेगी। इसको ही तूफान कहा जाता है। बाबा ने समझाया है शिव के ,ल0ना0 के , राम के पुजारी अच्छा उठावेंगे। उनको झट समझ में आवेगा और गंगा घाट में जाये बैठो। बोलो, पतित–पावन तो बाप है या यह पानी? इनसे तुम पावन कैसे बनेंगे? बाबा फर्रुखाबाद वालों को थैंक्स लिखेंगे। जो बाबा पर्चे के लिए कहते रहते हैं और कोई ने छपाकर नहीं भेजा है। उन्होंने भेजा है। अच्छी मेहनत म्युजियम आदि बना रहे हैं। अपना2 देते रहते हैं। म्युजियम खोलो। बहुतों का कल्याण होगा। निमित्त हम बनेंगे। बहुतों की आशीर्वाद मिलेगी। अज्ञानकाल मे भी बाप से लेते हैं। बाप से दो मुट्ठी चावल बदली महल लेते हैं। यह तो सबसे अच्छा हुआ ना। ऐसे बाप को तो बहुत लव.... .याद करना चाहिए। तुम अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। राजतिलक के लायक अपन को बनाया है। टीचर टीच करने लिए बांधा हुआ है। इसमें कृपा आदि की बात ही नहीं। रहम, कृपा भी यह गुरुओं ने किया जो तुम विकारी बन पड़े हो। बाप ओबिडियेंट सर्वेंट है। सबको धनवान ,सुखी स्वर्ग का मालिक बनाकर खुद अपने शांतिधाम बैठ जाते हैं। ऐसे बाप को तो प्यार करना चाहिए ना। भक्तिमार्ग में बच्चों (ने) इंजाम(अंजाम)
किया है बाबा आप आवेंगे तो हम आपके बनेंगे। दूसरा न कोई। बाकी तो यह सब मरे पड़े हैं। हम भी पढ़ाते हैं। जानते हैं पढ़कर पूरा किया तो यह शरी खतम हो जावेगा। अभी पढ़ाने वाला आया है। सिर्फ पढ़ना है और बाप को याद करना है। दैवी गुण धारण करनी है। रुलेंगे–पिलेंगे तो होंगे खराब। ऊँच पद पाना है तो एकरस होना चाहिए। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।

रात्रीक्लास 5.5.68 "शिवबाबा याद है?"

बच्चों के पास जितना समाचार आते हैं और कोई पास नहीं ;क्योंकि जैसे बाप सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं वैसे बच्चों के पास भी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का समाचार है। इसलिए इनको स्वदर्शनचक्रधारी कहते हैं। बाप को भी जानते हैं और रचना के आदि,मध्य,अंत को भी जानते हैं। सिर्फ चक्र को जानने से नई दुनियां के चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। बच्चे जानते हैं बाप से हम यह पद पा रहे हैं। बाप आकर नर से नारायण बनाने का ज्ञान दे रहे हैं। आत्मा जब तक प्योर न हुई है तो यह बन न सके। इसलिए बाप याद की यात्रा सिखला रहे हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करे तब ही पाप भस्म हो। यह है योगाग्नि। यह ज्ञान मिलता ही है कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर। इसमें आस्तिक भी बनते हैं बाप को और रचना को जानने से। त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। बच्चों को अभी याद है चक्र पूरा हुआ। यह दुनियां अभी खतम होती है। इसको फिर बेहद का वैराग्य कहा जाता है। बेहद का वैराग्य सिर्फ प्रवृत्ति मार्ग वाले ही करते हैं। निवृत्ति मार्ग वालों का धर्म है ही अलग। पुराने विश्व का सन्यास और नये विश्व की याद रहती है। बाप कहते हैं मैं आता ही हूं संगम पर। पुरानी दुनियां का पूरा सन्यास चाहिए। इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह विनाश हो जाना है। बच्चों को विनाश का सा. भी हुआ। यह भक्ति मार्ग नहीं। भक्तिमार्ग में अनेकों को याद करना पड़ता है। पूजा करनी पड़ती है। लौकिक बाप के होते पारलौकिक को कहते थे बाबा आप आवेंगे तो हम आप का बन 21जन्म लिए वर्सा लेंगे। ज्ञान और भक्ति का ड्रामा में नूंध है। ज्ञान से विश्व का मालिक, भक्ति से विश्व का गुलाम बनते हो। वहां प्रकृति भी रिगार्ड देती है। यहां प्रकृति भी दुःख देती है।